

## भारतीय शिक्षा प्रणाली में खुशी की किरण?

कृति गुप्ता

**आ**रम्भ से ही शिक्षा का अर्थ गत्यात्मक रहा है। प्राचीन काल में जिसे धर्म के रूप में परिभाषित किया जाता था, वह आज बदल गया है और अब उसे 'वैज्ञानिक सोच' के रूप में समझा जाने लगा है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में एक शिक्षित भारतीय की परिभाषा प्रतिबिम्बित होती है : वैज्ञानिक प्रकृति और उदार दृष्टिकोण वाला व्यक्ति जो व्यक्तिगत चिन्तन करने में सक्षम हो। वह शान्त और खुश रहकर अपने अवलोकन, प्रयोग और चिन्तन के आधार पर नए ज्ञान का युग लाएगा (Liav Or-gad, 2010, Heignotes, 2016)। लेकिन क्या यह स्वप्न, जिसे देश ने 1947 में देखा था, अपनी स्वतंत्रता के 73 साल बाद पूरा हो रहा है?

### शिक्षा के उद्देश्य

सरकार द्वारा शिक्षा में किया गया कोई भी निवेश भविष्य में होने वाले लाभ के मद्देनजर किया जाता है। हम विज्ञान, गणित और कला के क्षेत्र में ज्ञान और नवाचार के नए द्वार खोलने में सक्षम हैं। लेकिन हम इस सच्चाई से नज़रें नहीं चुरा सकते कि हर साल बड़ी संख्या में युवाओं को शिक्षित करने के बाद भी हम उन्हें एक ऐसे जीवन का आश्वासन नहीं दे पा रहे हैं जो

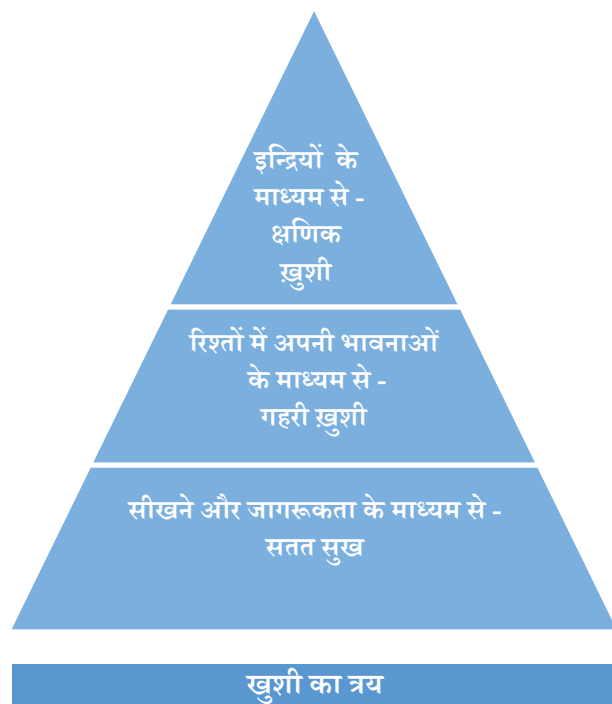
हिंसा, कड़वाहट, लालच, घृणा जैसी बुराइयों से रहित हो। विश्व स्तर पर आज मानव जाति के सामने सबसे बड़ा खतरा वे परिस्थितियाँ हैं जो सामाजिक बुराइयों के कारण तेज़ी से बढ़ रही हैं (शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार, दिल्ली)।

विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट (वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट), 2018 में भारत का 133वाँ स्थान है, साथ ही दुनिया में विद्यार्थियों की आत्महत्या की उच्चतम दर (ईटी कॉन्ट्रिब्यूटर्स, 2018) भी भारत में ही है; यह आँकड़े भारतीय विद्यालयों में विद्यार्थियों की खुशहाली को लेकर हमारी शिक्षा प्रणाली पर सवाल उठाते हैं।

दिल्ली सरकार ने इसे एक संकट के रूप में देखते हुए एक ऐसे पाठ्यक्रम की कल्पना की जो न केवल संज्ञानात्मक विकास, भाषा, साक्षरता आदि को बढ़ावा दे, बल्कि विद्यार्थियों के कल्याण और खुशी को भी सम्बोधित करे (एससीईआरटी, दिल्ली, 2019)। इस सपने को साकार करने के लिए, जुलाई 2018 में दिल्ली सरकार की आम आदमी पार्टी ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सभी सरकारी स्कूलों में नर्सरी से आठवीं कक्षा तक के लिए *खुशी पाठ्यचर्या* शुरू की।



मैंने अपनी शीतकालीन फ्रील्ड परियोजना के रूप में खुशी पाठ्यचर्या पर एक स्वतंत्र अध्ययन किया और फ्रील्ड में सात सप्ताह से अधिक समय बिताया। इसमें मैंने दिल्ली के आठ सरकारी स्कूलों के साथ कार्य किया, शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध जोड़ा, साक्षात्कार किए, कक्षाओं का अवलोकन किया और शिक्षकों एवं अन्य शैक्षिक अधिकारियों के साथ फोकस समूह चर्चाएँ कीं। इससे मुझे पाठ्यचर्या के शिक्षण और कक्षा में इसके अनुप्रयोगों को समझने में मदद मिली।



### खुशी पाठ्यचर्या क्या है?

खुशी पाठ्यचर्या (हैप्पिनेस करिकुलम या एचसी) वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया कोर्स है, जो अग्रहार नागराज (1999) नामक एक दर्शनशास्त्री द्वारा डिजाइन किए गए एक मजबूत मानवीय और सामाजिक मॉडल पर आधारित है, जिसे *द ट्राइएड ऑफ हैप्पिनेस* (एससीईआरटी, दिल्ली, 2019) कहा जाता है। इसके अनुसार, मनुष्य को अपनी इन्द्रियों, सम्बन्धों और सीखने के माध्यम से खुशी मिलती है। इनमें से प्रत्येक, मानव जीवन के चार आयामों को सम्बोधित करता है : भौतिक, व्यावहारिक, बौद्धिक और अनुभवात्मक। ए.नागराज के अनुसार, मानव को जीवन के इन सभी पहलुओं की आवश्यकता है और वह इनकी तृप्ति चाहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसे शान्ति, सन्तुष्टि और प्रसन्नता मिलती है और यह एक साथ मिलकर मानव की खुशी का निर्माण करते हैं।

इस मॉडल के आधार पर, दिल्ली शिक्षा विभाग ने अपनी पाठ्यचर्या को इस प्रकार बनाया है कि सभी इकाइयाँ और मॉड्यूल बच्चों को तीनों प्रकार के आनन्द प्रदान करते हैं। मॉड्यूल को एक सर्पिल रूप में डिजाइन किया गया है, जिसका अर्थ है कि बाद में आने वाली प्रत्येक थीम पिछली थीम से जुड़ेगी और ज्यों-ज्यों बच्चा एक कक्षा से अगली कक्षा में जाएगा, उसका ज्ञान गहरा होता जाएगा। शिक्षकों के मार्गदर्शन के लिए 'टीचर्स हैंडबुक फॉर हैप्पिनेस क्लास' प्रदान की गई। पाठ्यचर्या के रचनाकारों के अनुसार, इसकी सामग्री सार्वभौमिक है, इसका डिजाइन आयु के उपयुक्त है तथा इसे शिक्षकों, दर्शनशास्त्रियों और अन्य लोगों के मार्गदर्शन में बनाया गया है। इस पाठ्यचर्या से अपेक्षा यह है कि विद्यार्थियों की जागरूकता के स्तर एवं सचेतनता का संवर्धन हो तथा अधिगम और गहन हो ताकि वे एक खुशहाल और सार्थक जीवन जी सकें, भले ही भविष्य में वे कुछ भी बनें। इसके रचनाकारों का मानना है कि इस पाठ्यचर्या से हर बच्चा, चाहे वह किसी भी नस्ल, क्षेत्र, धर्म और जाति का हो, खुश रहना सीख सकता है क्योंकि खुशी एक कौशल है, और उचित मार्गदर्शन के साथ इसका अभ्यास किया जा सकता है और इसे सीखा जा सकता है।

### मुख्य विशेषताएँ

- खुशी की हर कक्षा में तीन मुख्य घटक होते हैं— सचेतनता या माइंडफुलनेस (10 मिनट), एक गतिविधि या कहानी (25 मिनट) जिसके बाद गतिविधि-उन्मुख चर्चाएँ होती हैं। प्रत्येक दिन एक विशिष्ट विषय पर ध्यान दिया जाता है, उदाहरण के लिए सोमवार को सचेतनता के साथ सुनने पर विशेष ध्यान दिया जाता है; शनिवार को अभिव्यक्ति पर आदि।
- इस पाठ्यक्रम में किसी कठोर समयरेखा का पालन नहीं किया जाता है। अगर शिक्षकों को लगता है कि किसी विशेष इकाई का सार विद्यार्थियों की समझ में नहीं आया है तो वे पूरे एक वर्ष तक उसी इकाई को समझा सकते हैं।
- इसमें बाल-केन्द्रित शिक्षणशास्त्र का अनुसरण किया जाता है, जहाँ बच्चे कक्षा का नेतृत्व करते हैं और शिक्षक चर्चाओं का सुगमीकरण करते हैं।
- इसमें कोई लिखित परीक्षा या ग्रेडिंग सिस्टम नहीं है। मूल्यांकन इसलिए किया जाता है कि बच्चे के जीवन में खुशी की स्थिति का सीधे अवलोकन और मॉनिटर किया जा सके।
- इस पाठ्यचर्या के उद्देश्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के बिल्कुल अनुरूप हैं।

## खुशी पाठ्यचर्या और नीति विज्ञान

एचसी के शुरू होने के बाद इस पाठ्यचर्या की सबसे ज्यादा आलोचना इस बात को लेकर हो रही है कि यह नीति विज्ञान (मॉरल साइंस) कार्यक्रमों के समान है जो दशकों से हमारी शिक्षा प्रणाली का हिस्सा है।

अपने अध्ययन में, मैंने पाया कि यह दोनों कार्यक्रम मिलते-जुलते अवश्य हैं पर वे समान नहीं हैं। दोनों के मूलभूत मूल्य समान हैं, लेकिन उनकी विशेषताएँ भिन्न हैं। नीति विज्ञान कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पहले से तय जीवन-मूल्य के बारे में सिखाना है। जिन कहानियों और शैक्षणिक विधियों का इस्तेमाल किया जाता है, वे शिक्षक-केन्द्रित ज्यादा होते हैं और जहाँ चर्चा के दौरान पूछे जाने वाले सामान्य प्रश्न इस प्रकार के होते हैं कि *आपने इस कहानी से क्या सीखा?*

खुशी की कक्षा में मेरा अवलोकन यह था कि इसमें जो प्रश्न पूछे जाते हैं वे बाल-केन्द्रित तरीके से पूछे जाते हैं; प्रश्न यह नहीं होता कि *आपने क्या सीखा* बल्कि यह पूछा जाता है कि *आपको क्या लगता है कि उस पात्र विशेष ने ऐसा क्यों किया होगा या यदि हम उसकी जगह होते तो हम क्या करते?* विद्यार्थियों को सोचने और चिन्तन करके उत्तर देने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है।

इसका तात्पर्य यह है कि नीति विज्ञान कक्षा में, 45 विद्यार्थी किसी कहानी से एक ही जीवन-मूल्य ग्रहण करते हैं जबकि खुशी की कक्षा में एक ही कहानी के 45 अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं।

### खुशी पाठ्यचर्या के बारे में धारणाएँ

मैंने पाया कि यद्यपि वर्तमान में देश में स्कूलों की संख्या की तुलना में एचसी बहुत कम स्कूलों में चलाया जा रहा है। फिर भी सभी हितधारकों की इसके सम्बन्ध में बहुत भिन्न धारणाएँ हैं :

- प्रधानाध्यापकों, खुशी समन्वयकों और जिला समन्वयकों के लिए यह कार्यक्रम बच्चों में आत्म-विश्वास, स्वस्थ सम्बन्ध, एक अच्छे और सुरक्षित समाज का निर्माण करने और पारिस्थितिक स्थायित्व के लिए संवेदनशीलता को बढ़ावा देने से सम्बन्धित है।
- शिक्षक विकास समन्वयकों और स्कूल परामर्शदाताओं (मेंटॉर) के लिए यह कार्यक्रम बच्चों में एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने से सम्बन्धित है ताकि वे चीजों पर ध्यान केन्द्रित कर सकें।
- शिक्षकों के लिए यह कार्यक्रम अच्छी और बुरी आदतों तथा नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित है जो बच्चों को तनाव से निपटने में मदद करते हैं ताकि वे अपनी पढ़ाई पर बेहतर तरीके से ध्यान केन्द्रित कर सकें।

- विद्यार्थियों के लिए, यह एक मजेदार कक्षा है जिसमें वे कहानियाँ सुनते हैं, अच्छी बातें सीखते हुए गतिविधियाँ करते हैं।
- 'आप' अधिकारियों के अनुसार, यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को ईमानदार और जिम्मेदार बनाकर मानवजाति के सर्वांगीण विकास के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली को सक्षम और मजबूत करता है। (एससीईआरटी, दिल्ली, 2019)

एचसी को प्रत्येक हितधारक अलग-अलग दृष्टिकोण से देखता है। इसका एक कारण यह है कि इन दो वर्षों में खुशी शिक्षकों को अपर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है— जब 2018 में इसे आरम्भ किया गया था तो उस दौरान सिर्फ एक कार्यशाला हुई थी। इसका मतलब यह है कि सभी नए शिक्षकों और नए सत्र में इस पाठ्यचर्या को पढ़ाना शुरू करने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण नहीं दिया गया था, हालाँकि नए शिक्षकों की मदद करने के लिए खुशी समन्वयक, स्कूल परामर्शदाता और शिक्षक विकास समन्वयक होते हैं, जिन्हें शिक्षकों की तुलना में अधिक बार प्रशिक्षण प्राप्त होता है, और वे शिक्षकों का मार्गदर्शन करते हैं। लेकिन एकत्रित आँकड़ों से पता चलता है कि शैक्षिक दबाव के कारण स्कूल में एचसी पर केन्द्रित नियमित बैठकें बहुत कम होती हैं। इससे शिक्षकों और सरकार के बीच खाई पैदा हुई है।

इस पाठ्यचर्या में युवा शिक्षकों के तैयार न होने का एक और कारण यह है कि अब तक के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम भावी शिक्षकों को खुशी पाठ्यचर्या में प्रशिक्षित नहीं करते और नए शिक्षकों को इसके बारे में तभी पता चलता है जब वे स्कूल आते हैं। इसलिए शिक्षकों के लिए शिक्षकों की हैंडबुक ही सबसे विश्वसनीय मार्गदर्शिका है, जो अब एचसी के सभी युवा और नए शिक्षकों के लिए एकमात्र सन्दर्भ पुस्तिका बन गई है।

### विद्यार्थियों पर प्रभाव

ऐसा पाया गया है कि बच्चों पर इसका सकारात्मक प्रभाव हुआ है जो साफ़ नज़र आता है। शिक्षकों के अनुसार, इस पाठ्यचर्या ने शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के बीच के अन्तर को पाटने में मदद की है। हिंसा में कमी आई है, विशेषकर लड़कों के स्कूलों में। बच्चों ने अपनी व्यक्तिगत कहानियों और अनुभवों को साझा करना शुरू कर दिया है जिसके कारण स्कूल में एक सुरक्षित और गैर-निर्णायक स्थान का निर्माण हुआ है।

माता-पिता भी बच्चों में एक स्पष्ट बदलाव देखते हैं, वे कहते हैं कि उनके बच्चे अब बहुत कुछ ऐसा सीख रहे हैं जो जीवन में उनकी मदद करेगा। उदाहरण के लिए, एक अभिभावक ने यह बात साझा की कि पहले वे जब भी वे बाज़ार जाते थे तो उनका बेटा हमेशा कुछ न कुछ माँगता था लेकिन अब वह ऐसा नहीं

करता। अब वह अपने पिता से कहता है, 'मुझे अपने दोस्तों को दिखाने के लिए कुछ भी नहीं चाहिए, मैं वही चीजें लूंगा जिनकी मुझे जरूरत है।'

### आगे का रास्ता

इस अध्ययन के आधार पर मेरा निष्कर्ष यह है कि इस पाठ्यचर्या का विद्यार्थियों के जीवन पर कुछ सकारात्मक प्रभाव तो पड़ा है, लेकिन पाठ्यचर्या और मेरे अध्ययन की सीमित अवधि के कारण शिक्षा प्रणाली पर इसका अधिक प्रभाव अभी तक स्थापित नहीं किया जा सका है। लेकिन मेरा अध्ययन एक बात स्थापित कर सकता है- वह यह कि अगर शिक्षाविद्, शिक्षक और अभिभावक साथ मिलकर काम करें तो हमारी शिक्षा प्रणाली में हर बच्चा खुश रहना सीख सकता

है। अभी एचसी हमारी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का हिस्सा नहीं है, लेकिन इसमें जो जीवन मूल्य हैं, उनकी जड़ें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ., 2005) और शिक्षा बिना बोझ के (1993) में देखी जा सकती हैं। इसका मतलब यह है कि अगर हम दिल्ली मॉडल को ध्यान में रखते हुए इन राष्ट्रीय दिशानिर्देशों और सुझावों को लागू कर सकें तो कोई भी स्कूल, शिक्षक या अभिभावक खुशी का अभ्यास करने में बच्चों की और खुद की मदद कर सकते हैं।

हमें केवल एक बात पर विश्वास करना चाहिए : खुशी एक भावना से कहीं बढ़कर है। यदि सही मार्गदर्शन हो और अच्छी तरह से इसका अभ्यास किया जाए तो इसे सिखाया जा सकता है।

### References

- Directorate of Education, Government of NCT of Delhi. (n.d.). 2015 and beyond Delhi Education Revolution. Delhi: Directorate of Education, Government of NCT of Delhi.
- ET Contributors. (2018, March 22). A student commits suicide in India every hour; how can our educational system prevent this? Retrieved from Economic Times: <https://economictimes.indiatimes.com/magazines/panache/between-the-lines/a-student-commits-suicide-in-india-every-hour-how-can-our-educational-system-prevent-this/articleshow/63411123.cms>
- Heignotes. (2016, December 17). THE PREAMBLE OF THE INDIAN CONSTITUTION AND ITS EDUCATIONAL IMPLICATIONS. Retrieved from Heignotes: <https://heignotes.com/2016/12/17/the-preamble-of-the-indian-constitution-and-its-educational-implications/>
- Liav Orgad. (2010). The preamble in constitutional interpretation. International Journal of Constitutional Law, 714-738.
- SCERT, Delhi. (2019). Happiness Curriculum. Delhi: SCERT, Delhi.



**कृति गुप्ता** शिक्षकों के परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी। शिक्षा में अपनी रुचि को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राथमिक शिक्षा में स्नातक की डिग्री पूरी की। एकलव्य, SAMA (महिलाओं और स्वास्थ्य का एक संसाधन समूह) और लोकपंचायत सहित कई संगठनों के साथ स्वैच्छिक रूप से काम किया। 2020 में उन्होंने अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से एमए (विकास) पूरा किया है। वे शिक्षा तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण के क्षेत्र में रुचि रखती हैं। उनसे [kritiguptaa96@gmail.com](mailto:kritiguptaa96@gmail.com) पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल